कहानी

पासवर्ड

सुधा ओम ढींगरा

101 Guymon Ct. Morrisville, NC-27560, USA

Email : sudhardrishti@gmial.com

91980 10672 (Cell)

91967 89056 (Home)

पच्चीस हज़ार डॉलर का चैक और महँगी बीएमडब्लू गाड़ी की चाबी हाथ में लिए तन्वी अपने प्रेमी मनु के साथ कचहरी से बाहर निकली. दोनों के चेहरे अपनी विजय से दमक रहे हैं. तन्वी को विश्वास नहीं था कि साकेत उसे इतनी आसानी से तलाक़ दे देगा और वह भी उसी की शर्तों पर. तन्वी और मनु ने षड्यंत्र रचा था जिसमें वे बड़ी चतुराई और कुशलता से निकल आए तथा इस साज़िश का किसी को पता भी नहीं चला; इसी सोच का दंभ उनकी जीत के सुरूर के साथ उनके चेहरों पर उभर रहा है. उनके द्वारा बिछाए गए जाल में साकेत ऐसा जकड़ा गया कि अंत में उन्हीं की बातें उसे माननी पड़ीं. इस भ्रम में वे प्रसन्न पार्किंग लॉट की ओर जा रहे थे.

कचहरी के पार्किंग लॉट में पहुँचते ही तन्वी और मनु आलिंगनबद्ध हो गए और एक-दूसरे को चूमने लगे.

साकेत की नज़र उन पर पड़ी. पिछले कई महीनों का तनाव, निराशा, गुस्सा, उदासी तथा आक्रोश उसकी आँखों में रास्ता तलाशने लगे. उसकी आँखों ने उन्हें रास्ता नहीं दिया.

तन्वी के लावण्य को अंतिम बार देखता हुआ साकेत वहाँ से चला गया...वह उसके सलोनेपन और भोले चेहरे से ही भ्रमित हुआ था.

कई बार इंसान का अच्छा स्वभाव उसके आड़े आ जाता है. उसकी विनम्रता को उसकी कमज़ोरी समझ कर ठगा जाता है और दग़ा देने वाले यह भूल जाते हैं कि शायद वह स्वभाव उस व्यक्ति की शक्ति हो. समझने और पहचानने की भूल धोखेबाज़ को महँगी भी पड़ सकती है, इससे बेख़बर वे अपनी चाल चल जाते हैं या उन्हें अपनी शातिर चालों पर विश्वास होता है. साकेत की शिष्टता को तन्वी और मनु ने अपने इरादों को सफ़ल करने की सीढ़ी समझ कर प्रयोग किया. तभी तो उन्होंने एक सोची-समझी साज़िश रची.

जॉन संज़ एंड जॉन संज़ कंपनी में साकेत एक सफ़ल और योग्य मार्केटिंग मैनेजर है. व्यावसायिक व्यवहार में बेहद कुशल यानी चतुर लोगों से निपटना जानता है. हाँ, सामाजिक और पारिवारिक मोर्चे पर सादगी, भद्रता और शालीनता से पेश आता है. तन्वी शायद इसी अंतर को समझ नहीं सकी.

साकेत ने तन्वी की सब शर्तें मान लीं और दोनों पक्षों के वकीलों ने उनकी इच्छानुसार काग़ज़ात तैयार कर दिए. जज के समाने तलाक़नामे पर साकेत और तन्वी ने हस्ताक्षर किए; वे काग़ज़ एक फ़ाइल में बंद कर दिए गए और उसके साथ ही वे रिश्ते, वे नाते, वे बंधन जिनमें छह माह पहले ही दोनों बँधे थे, फ़ाइल में नत्थी हो गए. साथ ही टूट गई साकेत की वह परिकल्पना, जिसको साकार करने की धुन में उसने यहाँ की कई अच्छी लड़कियों को ठुकरा दिया था. देसी मूल्यों से ओत-प्रोत लड़की को वह अपनी जीवन संगिनी बनाना चाहता था. परिवार ने तन्वी से उसे मिलाया था. दोनों परिवार वर्षों से एक-दूसरे को जानते थे और उसे उसमें वे सब गुण मिले जो वह अपनी सहयात्री में ढूँढ़ रहा था. तन्वी की सादगी ने उसे आकर्षित किया था और शादी के बाद तन्वी पूर्व से पश्चिम में आ गई थी.

जे एफ़ के एयरपोर्ट पर साकेत संवेदों की खुशबू से सराबोर बेताबी से तन्वी का इंतज़ार कर रहा था. तीन महीने बाद वह उससे मिलेगा—चाहे रोज़ फ़ोन से, स्काइप से, हर तकनीकी साधन से जितना वे जुड़ सकते थे, जुड़े हुए थे पर शादी के बाद तन्वी उसके पास आ रही थी, इन अनुभूतियों का अहसास उसके शरीर को तरंगित कर रहा था. शादी भी क्या थी, बस सगाई के साथ ही घर में पंडित बुलवा कर उनके फेरे करवा दिए गए थे. तन्वी का परिवार बिना शादी किए उसे विदेश भेजने को तैयार नहीं था. वह भी धूम-धाम की शादी और दहेज़ के विरुद्ध था. तन्वी मंगेतर-वीज़ा पर आ रही थी, इसलिए शादी की चर्चा भी नहीं की जानी थी. एक सादे से समारोह में तन्वी उसकी पत्नी बन कर उसके पारिवारिक घर में आ गई थी.

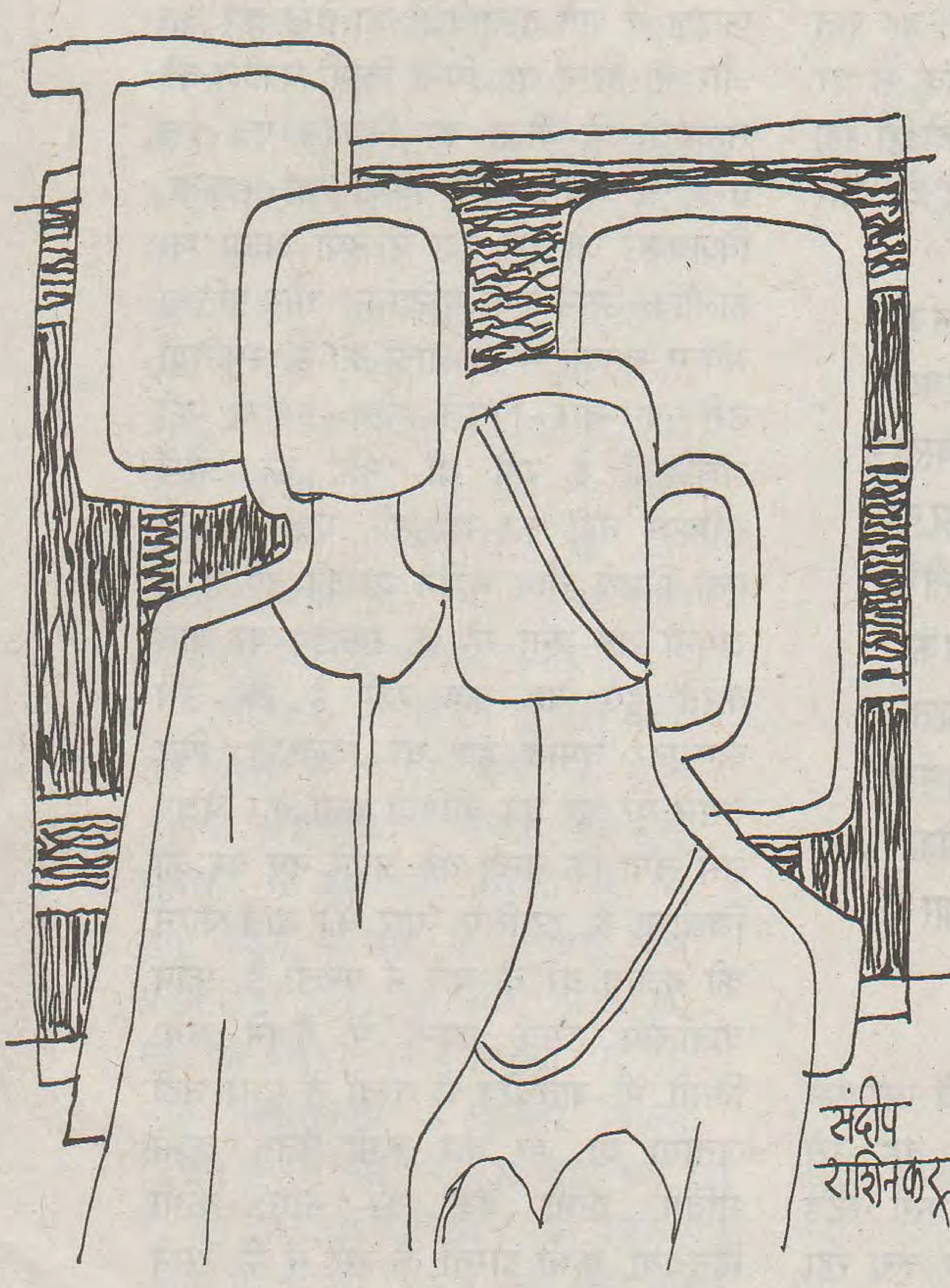

तन्वी के एयरपोर्ट से बाहर आते ही वह बाँहें फैलाए उसे मिलने के लिए आगे बढ़ा तो तन्वी को चक्कर आ गया. वह गिरते-गिरते बची. साकेत उसे सँभालते हुए एयरपोर्ट से बाहर ले आया जहाँ उसकी कार खड़ी थी.

"रास्ते में उल्टियाँ आती रहीं. शायद कमज़ोरी हो गई है." तन्वी कार की सीट पर अधलेटी होती हुई बोली.

साकेत ने उसके सम्मान में घर खूब सजाया हुआ था. सजावट की एक-एक पत्ती और फूल उसकी भावनाएँ प्रगट कर रहे थे. उसने वहीं फूलों की सजावट में कुछ उपहार रखे हुए थे. शादी इतनी जल्दी में हो गई थी कि वह उसे कोई उपहार नहीं दे पाया था, न ही उसके प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त कर पाया. शादी के तीसरे दिन वह यहाँ आ गया था. तन्वी दैहिक संबंधों की ओर नहीं बढ़ना चाहती थी. उसकी इच्छा थी कि संबंधों की शुरुआत तभी हो जब उनमें दोस्ती हो जाए. साकेत ने उसकी इच्छा का सम्मान किया.

तन्वी ने घर में प्रवेश करते ही एक नज़र उस सजावट पर डाली और मुँह फेर लिया. साकेत को उसका व्यवहार अटपटा लगा पर उसने सोचा, तबियत ख़राब हो तो रोमांटिक वातावरण कहाँ अच्छा लगता है. शनिवार-रविवार यानी पूरा वीकेंड वह बिस्तर में घुसी रही और साकेत उसकी सेवा करता रहा. साकेत ने सोचा कि कोर्ट में शादी की तारीख़ आगे कर देनी चाहिए, वह जा नहीं पाएगी. यहाँ की कोर्ट में शादी हुए बिना ग्रीन कार्ड के लिए अप्लाई नहीं किया जा सकता था. और ग्रीन कार्ड के बिना वह यहाँ कुछ भी नहीं कर सकती थी. एक तरह से यहाँ रहने और काम करने का परमिट है ग्रीन कार्ड.

वीकेंड होने से सभी दफ्तर बंद थे. वह वकील को शादी की तिथि बदलने के लिए फ़ोन नहीं कर पाया. सोमवार सुबह उसने वकील से बात करने के लिए फ़ोन उठाया ही था कि तन्वी ने उसका हाथ पकड़ लिया. वह शादी के लिए तैयार खड़ी थी. वह उसे देखता रह गया. कल रात तक तो इससे उठा नहीं जा रहा था; आज सुबह इतनी तरो-ताज़ा कैसे हो गई? उसने अपने उपहार भी उठा लिए थे.

शादी की औपचारिकता के बाद वे कानूनन इस देश में पति-पत्नी हो गए.

उसने क्षणिक आवेग में तन्वी को चूम लिया.

वह गुस्से में तिलमिला गई—"आप अपना वादा नहीं तोड़ सकते. अभी हमारी दोस्ती शुरू ही हुई है. मेरी मर्ज़ी के बिना आप मुझे छुएँ नहीं."

साकेत उसके इस तरह के व्यवहार से सकपका गया, "सॉरी तन्वी, मैंने तो दोस्त को ही चूमा है."

"नहीं, आपने दोस्त को नहीं पत्नी को चूमा है." वह सख़्ती से बोली.

उसके भीतर कुछ टूट गया. शादी से पहले की तन्वी, अपने देश में शादी के तीन दिन बाद की तन्वी और उसके साथ यहाँ विदेश में रहने आई तन्वी के स्वभाव का अलगाव उसे महसूस हुआ जो उसके भावनात्मक अहसास में काँटों की चुभन-सा चुभ गया.

अपने माँ-बाप, परिवार और देश को छोड़ कर आई है. दिन-रात का अंतर भी शरीर पर प्रभाव डाल रहा होगा, इसीलिए शायद चिडचिड़ी हो गई है. उसने अपने भीतर की टूटन को सोच की गोंद से जोड़ने की कोशिश की. दोनों देशों की सांस्कृतिक और वैचारिक भिन्नता के साथ तालमेल बैठाने के लिए तन्वी को समय देना चाहिए. उसके भीतर भावनाओं का अलाव बुझ गया था, उसने उसे जलाए रखने के लिए सोच की चिंगारियों को सुलगाए रखा.

घर आते ही वह फिर बिस्तर में घुस गई, उसके सिर में दर्द शुरू हो गया था.

अगले दिन उसने तन्वी को उठाना ज़रूरी नहीं समझा. उसे अपने काम करने की वर्षों से आदत है. जाने से पहले रसोई के काउंटर पर वह अपने कम्प्यूटर का पासवर्ड, यदि वह कम्प्यूटर का प्रयोग करना चाहे, कुछ डॉलर, अपना क्रेडिट कार्ड और टैक्सी स्टैंड का नंबर छोड़ गया; अगर तन्वी बाहर घूमने जाना चाहे तो उसके पास हर तरह की सुविधा होनी

चाहिए. उसने कम्प्यूटर का पासवर्ड ही नहीं, अपनी ज़िंदगी का पासवर्ड उसे दे दिया था.

तन्वी घर में अकेली है, पूरा दिन वह सोचता रहा और जल्दी घर आ गया. घर में प्रवेश करते ही उसने उसे फिर बिस्तर में ही पाया. उसे देखते ही वह बोली–"हर महीने के इन दिनों में मुझे बहुत तकलीफ़ होती है. आराम करके ही इस परेशानी को कम कर पाती हूँ." इससे पहले कि वह कुछ कहता, बिस्तर पर पड़ी एक फ़ाइल पर उसकी नज़र पड़ी. वह उसे खोल कर देखने लगा. वीज़ा अप्लाई करने के लिए सारे कागज़ तैयार थे. जिन्हें भरने में, प्रमाणपत्र जुटाने में काफ़ी समय लगता है. पर उसके बारे में इतनी सारी जानकारी तन्वी को मिली कहाँ से. इसका मतलब तन्वी ने उसका कम्प्यूटर, पूरा घर, एक-एक दराज़ देखी है. शंका उसके भीतर रास्ता तलाशने लगी. पत्नी है, उसका हक़ बनता है. उसने शंका को पनपने नहीं दिया. उसके साथ बैठ कर भी तो यह कार्य किया जा सकता था. कितना मज़ा आता. पता नहीं क्यों उसने कह दिया..."तन्वी, तुम ठीक होतीं तो बैंक जाकर ज्वाइंट अकाउंट भी खुलवा देते. एप्लीकेशन की सारी फ़ॉरमैलीटिज़ पूरी हो जातीं."

यह सुनते ही वह उठ बैठी–"चलें, जो काम कल करना है, उसे आज ही समाप्त कर लेते हैं."

"इतनी जल्दी क्या है? तुम्हारी तबियत ठीक नहीं. एक-दो दिन में भेज देंगे."

"तबियत की वजह से काम नहीं रुकने चाहिए. मैं तो चाहती हूँ, जल्दी वीज़ा मिले और मैं नौकरी पर जाऊँ. मेरे जैसे प्रोफ़ेशनल्स घर में नहीं बैठ सकते."

"ऐसे कामों में समय तो लगता है. तुम्हें धैर्य से काम लेना होगा."

"नहीं, अब चलिए. बैंक का काम समाप्त कर डिनर बाहर ही कर लेंगे. एप्लीकेशन में जो छूट गया होगा उसे रात को पूरा कर लें. वैसे मैंने आपकी तरफ़ से सब कुछ भर दिया है, सब कुछ चैक करके आप हस्ताक्षर कर दीजिए. कल मैं पोस्टऑफ़िस जाकर इसे मेल करवा दूँगी." कह कर वह उसे धकेलती-सी कार तक ले गई.

घर आते ही तन्वी फ़ाइल उसे थमाती हुई बोली–"मेरा सिर फिर से दुखने लगा है. प्लीज़ आप इसे चेक कर लें. जो कुछ रह गया हो उसे पूरा कर दें. मैंने अपने साइन कर दिए हैं, आप सब देख कर अपने सिग्नेचर कर दें. भूलना नहीं. एक सप्ताह के लिए आप कैलिफोर्निया जा रहे हैं. मैं नहीं चाहती वीज़ा प्रोसेस डिले हो. मेरी तबियत ठीक नहीं. आप आज भी दूसरे कमरे में सो जाएँ."

जब से तन्वी आई है, दोनों अलग-अलग कमरों में सो रहे हैं. वह रात को अपने बिस्तर में लेटे हुए, बैंक से घर आने तक के समय को सोच में दोहरा रहा था. उसे 'कुछ' परेशान कर रहा था और

> **तन्वी घर में अकेली है, पूरा दिन वह सोचता रहा और जल्दी घर आ गया. घर में प्रवेश करते ही उसने उसे फिर बिस्तर में ही पाया. उसे देखते ही वह बोली–"हर महीने के इन दिनों में मुझे बहुत तकलीफ़ होती है. आराम करके ही इस परेशानी को कम कर पाती हूँ." इससे पहले कि वह कुछ कहता, बिस्तर पर पड़ी एक फ़ाइल पर उसकी नज़र पड़ी. वह उसे खोल कर देखने लगा. वीज़ा अप्लाई करने के लिए सारे कागज़ तैयार थे. जिन्हें भरने में, प्रमाण पत्र ...**

वह 'कुछ' उसकी पकड़ में नहीं आ रहा था. रेस्तराँ में बैठे हुए जब वह उसे सब-वे, स्टेशन, बस स्टॉप, टैक्सी स्टैंड और इनमें सफ़र करने के टिप्स बता रहा था तो उसने कोई रुचि नहीं दिखाई बल्कि उसने उसे यह एहसास कराया कि वह इस देश को उससे अधिक जानती है और वह बेवजह अपना समय बर्बाद कर रहा है. वह चाहता था कि कैलिफोर्निया जाने से पहले तन्वी को सब कुछ समझा दे कि उसकी टूरिंग जॉब है, आए दिन वह घर से बाहर रहेगा.

उसे तन्वी का व्यवहार अजीब-सा लग रहा है. नव-विवाहिता की तरह वह व्यवहार नहीं कर रही. कहीं वह उससे अधिक अपेक्षा तो नहीं कर रहा. किसी समस्या या चुनौती से पहले आत्मचिंतन करना उसका स्वभाव है. नहीं, वह एक साधारण पुरुष की तरह बस अपनी नई ब्याहता से कुछ चंचलता, संवेदना और भावनाओं की थोड़ी-सी अभिव्यक्ति चाहता है. दोस्ती बढ़ाने के लिए भी तो संवाद की ज़रूरत है. पर यहाँ तो भावनाएँ सूखी हुई लग रही हैं, जिसका अहसास उसे पहले नहीं हुआ. तन्वी उसे अति उत्साही, महत्त्वाकांक्षी और ओवरस्मार्ट लड़की लगी, जिसकी तीखी-पैनी नज़र और सोच सिर्फ़ लक्ष्य देखती है. जिसके लिए वह और शादी दूसरे नंबर पर हैं. फ़ाइल में लगे दस्तावेज़ों का देख कर वह और भी हैरान था. बिना किसी वकील की सहायता के वीज़ा का निवेदन पत्र इस तरह से तैयार नहीं किया जा सकता, विशेषकर जो इस देश में नया आया हो. हालाँकि उसने एक बुद्धिमान और प्रतिभा संपन्न लड़की से ही शादी की है. स्मृतियाँ उसे बार-बार पिछले तीन महीनों की झलकियाँ दे रही थीं. नींद को आँखें स्वीकार नहीं कर रही थीं. एक के बाद एक पिछले तीन महीने उसकी आँखों से अपनी राह बना रहे थे. स्काइप पर बात करते हुए वह कह रही है कि उसे कम्प्यूटर घुमाते हुए घर दिखाओ. फिर उसने पूरे घर का वीडियो बना कर भेजा. उसे लगा कि तन्वी को अपने नए घर की जिज्ञासा है, इसलिए प्यार की बातें करने की बजाय घर के बारे में पूछती है. फ़ोन वार्तालाप उसके कानों में गूँजने लगे. किसी भी बातचीत में तन्वी ने प्यार नहीं जताया था. हर बार कभी वेतन, कभी सेविंग, कभी बैंक का नाम, कभी दिनचर्या, कभी दोस्तों के बारे में ही उसने पूछा था. हाँ, वह पूछती इस तरह से थी कि उसे कभी बुरा नहीं लगा.

उसे तन्वी का यह कहना–'लंच कर लीजिए, डिनर किया या नहीं, प्लीज बड़ी देर हो गई, सो जाएँ,' उसे प्यारा लगता था. अन्य बातों की ओर उसका ध्यान नहीं गया था. वह जल्दी ही किसी निर्णय पर नहीं पहुँचना चाहता था. तन्वी को वह समय देना चाहता था पर वह बेचैन था. बेचैनी का कारण नहीं ढूँढ पा रहा था.

मन और बुद्धि के अंतर्द्वंद्व में वह उलझ रहा था. वह परम्परावादी नहीं है पर

शादी की संस्था में विश्वास करता है. उसका मन तन्वी को एक व्यावसायिक लड़की के साथ-साथ एक पत्नी के रूप में भी देखना चाहता है. घर के कामों के लिए वह पत्नी नहीं लाया, वे सब काम तो वह स्वयं भी कर लेता है. वह पत्नी को एक साथी, संगिनी के रूप में देखना चाहता है. उसके लिए तालमेल ज़रूरत है. उसे लगा था कि उसने तन्वी को अपनी सोच, अपने विचारों और जीवन दर्शन से काफ़ी हद तक परिचित करवा दिया था और उसने भी बड़ी उमंग के साथ अपने इस तरह के विचारों को प्रगट किया था. उसने तन्वी और उसके परिवार को यह भी बताया था कि वीज़ा के लिए कम से कम तीन महीने का समय लगेगा और उसके लिए धैर्य की ज़रूरत होगी. अब उसे इतनी हड़बड़ी क्यों? जब से वह आई है उसने एक बार भी उसके बारे में नहीं सोचा. बुद्धि में शंका निवास कर गई है. कहीं कुछ गड़बड़ है. इसी द्वंद्व में उसने फ़ाइल एक तरफ़ रख दी और सोचते-सोचते सो गया. सुबह उसे कैलिफ़ोर्निया की फ्लाइट पकड़नी है.

कैलिफ़ोर्निया पहुँचते ही उसे तन्वी का गुस्से से भरपूर शब्दों के बाण छोड़ता फ़ोन आया—"साकेत, मैंने तुम्हें समझने में भूल की...सोचती थी कि तुम विदेश में रहते हो, तुम्हारी सोच प्रगतिशील पुरुष की सोच होगी, जो स्त्री को बराबरी का दर्जा देगा. पर तुम उसी मानसिकता के शिकार निकले जिससे हमारी पीढ़ी की लड़कियाँ लड़ रही हैं. तुम जान-बूझकर साइन नहीं करके गए ताकि मैं तुम्हारी मिन्नतें करूँ और तुम्हारे सामने बिछ जाऊँ. मिस्टर साकेत पाठक, मैं आधुनिक लड़की हूँ. अपने अधिकारों के प्रति सजग हूँ. तुम्हें वापिस आते ही साइन तो करने पड़ेंगे. यह मेरा हक़ है. वीज़ा तो मैं लेकर रहूँगी." और उसने फोन काट दिया.

साकेत सकते में आ गया. क्या आधुनिक नारी ऐसी होती है कि मतलब है तो पति के लिए संबोधन 'आप' नहीं तो 'तुम'. सच जाने बिना बस पति को कटघरे में खड़ा करके दोषी घोषित कर दो, उसे बोलने का मौका भी न दो. उसे तन्वी के व्यवहार से झटका लगा. जब से वह आई है, वह तनाव में रह रहा है. संबंधों में जिस मधुरता की तलाश वह कर रहा था, वह अगरबत्ती के धुएँ-सी खुशबू न देकर काला धुआँ छोड़ती हुई उसका दम घोंट रही है. देश से जब भी वह फ़ोन करती तो बड़ी मीठी-प्यारी बातें करके

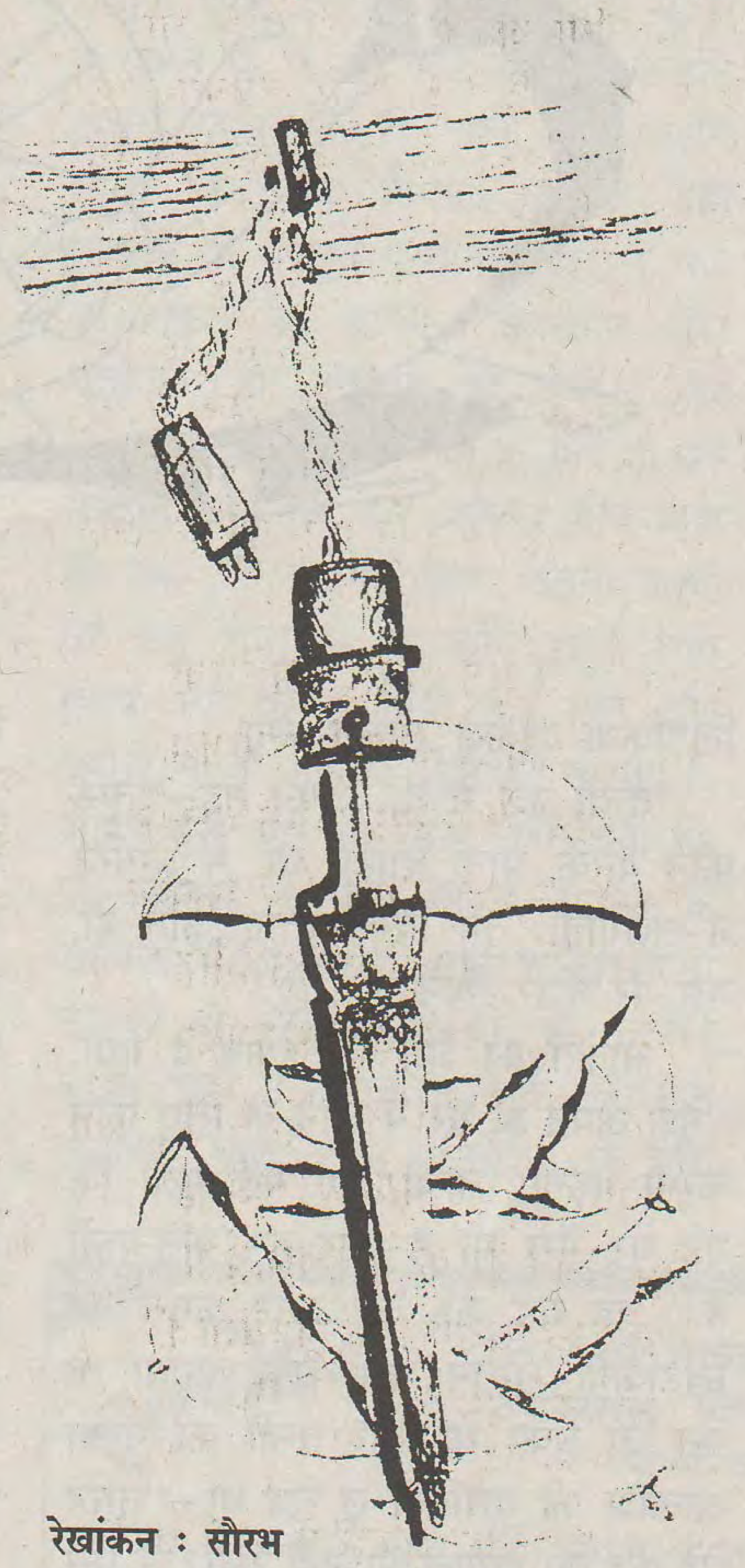

रेखांकन : सौरभ

उसका हाल-चाल पूछती थी. अब क्या हो गया? उसका अस्तित्व ही नकार दिया गया है. वह क्या चाहता है, तन्वी ने यह जानने की कोशिश ही नहीं की. उससे कहाँ गलती हो गई...वह सोचने लगा.

पितृसत्ता से भारतीय नारी बेइंतिहा पीड़ित हो चुकी है, वह समझता है. वह स्वयं भी पितृसत्ता के विरुद्ध है. अभी तन्वी ने उसे समझा ही कितना है जो इस तरह की बातें कह गई. जूलिया व्यवसायी, महत्त्वाकांक्षी बड़े अच्छे स्वभाव वाली लड़की है, पूर्वी सभ्यता के रंग में रँग गई है; फिर भी उसने जूलिया का प्रणय निवेदन स्वीकार नहीं किया, क्योंकि वह बात-बात में नारी सशक्तीकरण का झंडा उठा लेती थी. साकेत इसे एकतरफ़ा सोच मानता है. झंडा वहाँ उठाया जाए जहाँ पुरुष अपनी सत्ता का दुरुपयोग करे. जो पुरुष स्वयं ही इस सत्ता के विरुद्ध हो, उसे तो इससे दूर रखा जाए. ऐसा व्यवहार तब नारेबाज़ी का रूप ले लेता है. क्या तन्वी भी ऐसी है? उसके भीतर कई प्रश्न कुकरमुत्ते-से उग गए.

पूरा सप्ताह तन्वी ने उसके फ़ोन कॉल्स का उत्तर नहीं दिया. साकेत को बहुत बुरा लगा. नई-नई शादी हुई है और ऐसा संबंध. उसने अपने भाई से बात की, जो तन्वी को पहले से जानता था. वह भी तन्वी के इस तरह के व्यवहार से हैरान हो गया.

कैलिफोर्निया का काम शीघ्र समाप्त हो गया और वह एक दिन पहले घर वापिस आ गया. रास्ते भर तन्वी को अचम्भित करने की कल्पना करता रहा. दरवाज़ा खोलते ही तन्वी के चेहरे के हाव-भाव बदले हुए लगे. उसके अकस्मात् आने पर वह खुश नहीं हुई. घर के भीतर प्रवेश करते ही उसे एक नौजवान मिला.

"साकेत, ये मेरे मित्र मनु हैं, जो मेरे साथ कॉलेज में पढ़ते थे. यहाँ मॉल में मुझे मिल गए और मैं इन्हें घर ले आई." साकेत ने हाथ मिलाया और छूटते ही कहा—"आपको उसी फ़्लाइट में एयरपोर्ट से बाहर आते देखा था, जिसमें तन्वी आई थी." तन्वी एकदम बोली—"नहीं साकेत, ये तो पिछले एक वर्ष से यहाँ हैं. आपको भ्रम हुआ है." साकेत मुस्करा दिया. उसे पता था कि उसे भ्रम नहीं हुआ. उसने तन्वी से कुछ दूरी पर मनु को जहाज़ से बाहर लॉबी में आते देखा था. मनु रात के खाने के लिए नहीं रुका.

रात्रि भोजन के बाद तन्वी वीज़ा का निवेदन पत्र और उससे जुड़े दस्तावेज़ ले आई. साकेत को हैरानी नहीं हुई. उसे ऐसी ही उम्मीद थी. उसने भी सबकुछ पढ़ कर हस्ताक्षर कर दिए. वह थकान का बहाना करके अपने कमरे में सोने चला गया. उसने अपने मोबाइल में वे चित्र देखे जो उसने एअरपोर्ट पर तन्वी के खींचे थे.

मनु पीछे भीड़ में दिखाई दिया. उसने उसी समय उस चित्र को अपने भाई को यह लिख कर भेज दिया—"यह लड़का तन्वी के कॉलेज का मित्र है. अमेरिका कब आया, पता लगाओ."

उदासी अनचाही घटा-सी घिर आई और पूरे बदन में समा गई, तन्वी के झूठ ने शक और सोच के द्वार खोल दिए. जीवन में पहली बार चिंतन के खुले आकाश में वह अरस्तू बन उड़ा. भूत-भविष्य और वर्तमान में डुबकी लगाई. कंपनी में उसे 'दूरगामी चिंतक' कहा जाता है. दूरदर्शिता से वह कंपनी को बुलंदियों पर ले गया है. शायद तभी वह कंपनी की ज़रूरत है. पर इस समय तो घर और जीवन से जुड़े पहलू हैं, रिश्ते हैं, भावनाएँ और संवेग हैं. परिवारों का सम्मान और कुछ महीनों की शादी. तन्वी पत्नी का कोई धर्म नहीं निभा रही, फिर भी वह उसकी पत्नी है. एक लम्बे मनन के बाद वह उस 'कुछ' को पकड़ पाया जो कई दिनों से उसकी परेशानी का कारण था. उसने मन-ही-मन अपनी दिशा निर्धारित की और नींद तो कब से इंतज़ार कर रही थी, चुपके-से उसे थपथपाने लगी.

सुबह अख़बार खोलते ही वह उछल पड़ा. उसकी कंपनी की जोड़ों के दर्द की दवाई मार्केट में जाने के लिए स्वीकृत हो गई है. उसने तन्वी को बताया कि दवाई की मार्केटिंग के सिलसिले में अगले कुछ महीने वह बहुत व्यस्त रहेगा. तन्वी के चेहरे के भावों को वह गौर से देखता रहा. वहाँ वह कुछ अधिक ढूँढ़ नहीं पाया.

दो महीने लुका-छिपी में निकल गए. कुछ दिन वह बाहर रह कर आता, तन्वी कभी घर पर मिलती कभी नहीं. एक-दो दिन घर रह कर वह फिर किसी शहर चला जाता. शारीरिक संबंधों को कोई स्थान नहीं मिला इस रिश्ते में. साकेत अब स्वयं ही तन्वी से दूर रहने लगा. वह बहुत कुछ समझ गया था जिसे तन्वी भाँप नहीं पाई.

डैलस से जल्दी लौटना उसके लिए वरदान साबित हुआ. नाटक पर से पर्दा उठ गया. घर में प्रविष्ट करते ही उसने मनु और तन्वी को शराब के साथ सिगरेट का धुआँ उड़ाते देखा. सिगरेट के धुएँ से उसे एलर्जी थी. वह खाँसने लगा और

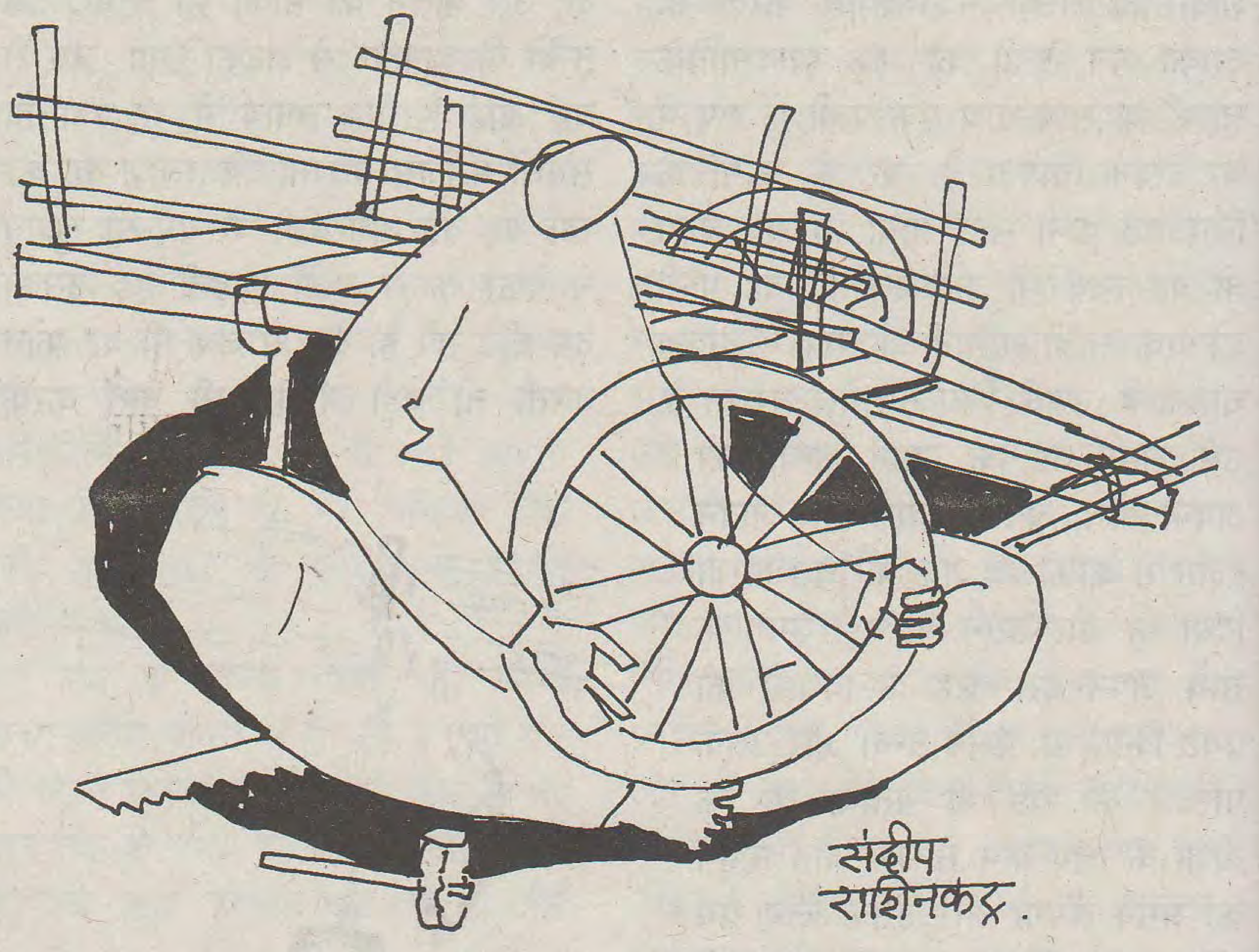

खिड़कियाँ दरवाज़े खोलने लगा.

तन्वी नशे में थी, बिफर गई—"तुम्हें फ़ोन करके आना चाहिए था. मैं सिगरेट न सुलगाती. तुम बिना बताए आते हो, मुझ पर नज़र रखने के लिए."

साकेत का धैर्य भी जवाब दे गया. "मुझे अपने ही घर में आने के लिए फ़ोन करना पड़ेगा? तन्वी, यह मत भूलो कि यह घर मेरा भी है और हम पति-पत्नी हैं." वह यह कह कर दूसरे कमरों की खिड़कियाँ खोलने चला गया. आया तो मनु जा चुका था और तन्वी का गुस्सा आकाश की बुलंदियाँ छू रहा था—"तुमने मेरे फ्रेंड का ख़याल भी नहीं रखा? मैं ऐसे दकियानूसी, ओल्ड फ़ैशंड आदमी के साथ नहीं रह सकती जो हर समय मेरी जासूसी करता है. जो मर्द अचानक घर आता है, इट मींस वह अपनी बीवी पर शक करता है और उस पर नज़र रखना चाहता है. मैं आज़ाद ख़यालों की मॉडर्न लड़की हूँ. यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकती."

"तन्वी, तुम आधुनिकता की आड़ में आज़ादी का नाजायज़ फ़ायदा उठा उसे अर्थहीन कर रही हो. तुम्हारे जैसी लड़कियाँ दूसरी लड़कियों का स्तर भी गिराती है. तुम मुझे जो भी समझती हो, मुझे उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता. अगर मेरे साथ नहीं रह सकती तो तलाक़ ले लो." साकेत ने बड़ी शांति से कह दिया.

"पच्चीस हज़ार डॉलर और बीएमडब्लू नए मॉडल की कार दो; तो तलाक़ दूँगी. मेरे पास अभी जॉब नहीं है और यहाँ सेट होने के लिए यह सब चाहिए."

साकेत ने बड़ी लापरवाही से कहा "मिल जाएगा." और घर से बाहर चला गया. फिर वह उन्हें कोर्ट में ही मिला.

कचहरी के पार्किंग लॉट से ही तन्वी और मनु अपनी जीत का जश्न मनाने मनु के अपार्टमेंट की ओर चल पड़े. दोनों खुश थे कि उनकी योजना सफ़ल रही.

वे दोनों ज्योंही मनु के अपार्टमेंट के सामने पहुँचे, दो पुलिस ऑफिसर और एक वकील खड़ा था. वकील ने आगे हो कर उन्हें कहा—"मेरा नाम पंकज मेहता है और मैं मिस्टर साकेत पाठक का वकील हूँ और उन्होंने आपके विरुद्ध पुलिस कम्प्लेंट फ़ाइल की है, जिसमें आपके ख़िलाफ़ कई एलीगेशन्स हैं. आप पुलिस गाड़ी में बैठ जाएँ नहीं तो ये आपको अरेस्ट करेंगे." दोनों ने पुलिस ऑफिसर के हाथों में हथकड़ी देखी और वे चुपचाप पुलिस गाड़ी में जा बैठे.

पुलिस थाने में पुलिस ऑफिसर ने साकेत के वकील मिस्टर मेहता को उनके ख़िलाफ़ सारे आरोप पढ़ कर सुनाने के

लिए कहा–

"मिस्टर साकेत के साथ आपने धोखाधड़ी की है. आप प्रेमी-प्रेमिका हैं और एक अमीर एनआरआई से शादी करके वीज़ा लेने और पैसा ऐंठने की जो योजना आप लोगों ने बनाई, उसके प्रूफ हमारे पास पहुँच गए हैं. ई-मेल्ज़, एसएमएस, फोटोग्राफ–सब कुछ पुलिस ऑफिसर को दे दिए गए हैं.

"मिस तन्वी, आपने मिस्टर साकेत के साथ कोई शारीरिक संबंध नहीं बनाए, पर यहाँ आने से पहले आपने जिस क्लिनिक में अबॉर्शन करवाया उसकी पूरी रिपोर्ट, डॉक्टर के लैटर के साथ हमारे पास है.

"पिछले तीन महीने में आपने मिस्टर साकेत के बैंक और क्रेडिट कार्ड से पचास हज़ार डॉलर खर्च किए हैं." तन्वी एकदम बोल पड़ी–"साकेत को इसका पता था तो ऐतराज़ क्यों नहीं किया? अब किस बात की शिकायत?"

"आप अपने पर खर्च करतीं तो कोई शिकायत नहीं थी. मिस्टर मनु के अपार्टमेंट का रेंट और उसके सारे खर्च उस पैसे से किए गए हैं."

अब मनु बोला–"क्या प्रूफ है?"

"मिस्टर मनु, अगर आप आधुनिक युग के मॉडर्न युवक हैं; तो इस युग की तकनीकी तरक्की से भी वाकिफ़ होंगे. जिस देश में आप बैठे हैं, यहाँ प्रूफ जुटाना मुश्किल नहीं. सब रसीदें, बिल आदि पुलिस ऑफिसर के पास हैं."

अब पुलिस ऑफिसर खड़ा हो गया और बोला–"मिस्टर मनु, यू आर इल्लीगल हियर, योअर वीज़ा वाज़ ओनली फॉर फ़िफ्टीन डेज़. यू डिड नॉट रिन्यू दैट. नाऊ रूल्स आर डिफ़रेंट फॉर इल्लीगल इमीग्रेंट्स." मनु का चेहरा पसीने से भीग गया.

ऑफिसर तन्वी की ओर मुड़ कर बोला–"मिस तन्वी, शो मी योअर ग्रीनकार्ड." मिस्टर मेहता बोले–"ग्रीन कार्ड इनके पास नहीं है और ये भी इल्लीगल हैं."

"नहीं, मेरा ग्रीन कार्ड एक-दो दिन में आने वाला है." तन्वी ज़ोर से बोली.

अब पंकज मेहता मुस्करा पड़े–"तन्वी जी, षड्यंत्र क्या आप ही रच सकती है? आप अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए इतनी जुनूनी हो गईं थीं, यह भी भूल गईं कि मेरे क्लाइंट मिस्टर साकेत एक बुद्धिमान और सुलझे हुए इंसान हैं, वह आपकी मंशा को समझ सकते हैं. आप ग्रीन कार्ड लेने के लिए इतनी उत्साहित और अधीर हो गई थीं कि आपने मिस्टर साकेत की तरफ से भी फ़ॉर्म भर दिए, जबकि कुछ जानकारी और सूचना वे ही दे सकते थे. वे भी मस्त हो गए, उन्होंने अधूरी जानकारी ही जाने दी. उन्होंने सोचा कि अगर आपका व्यवहार सही निकला तो वे सब दस्तावेज़ बाद में भेजे जा सकते हैं. आपका अल्पज्ञान और चालाकी ही आपको ले डूबी. आप इमिग्रेशन के कागज़ भेजने के बाद ही यह समझने लगीं कि बस आपका ग्रीन कार्ड तो अब आ जाएगा. मैडम, इतनी जल्दी यह सब होता हो, तो लोग इसके लिए संघर्ष क्यों करें? अपनी तेज़ गति और अधैर्य, में जो आपकी पीढ़ी का स्वभाव है, आपने इस ओर भी ध्यान नहीं दिया कि पत्र-व्यवहार के लिए मिस्टर साकेत के ऑफिस की ई-मेल है. सही जानकारी तो आपको हो नहीं सकती थी. हाँ, उन्होंने आपके चेहरे से नक़ाब उठाने के लिए एक छोटी-सी चाल चली, इमिग्रेशन के एक वकील से बात की, उसका ख़र्चा उठाया और उसकी सलाह पर चले. आपको कहा कि इस वकील को लेने से वीज़ा जल्दी मिल जाएगा. वह वकील आपको ई-मेल भेजता रहा, आपको वीज़ा स्टेटस बताता रहा कि आप लापरवाह हो जाएँ और इमिग्रेशन की साइट पर जाने की आपकी इच्छा ही न हो. आपकी एप्लीकेशन तो तथ्यों और सूचना की कमी के कारण पहले ही रिजेक्ट हो गई थी. तलाक़ के लिए बहुत-सी बातें कोर्ट में उठाई जा सकती थीं, पर मिस्टर साकेत ने आपकी शर्तों पर जल्दी तलाक़ इसलिए दे दिया ताकि आप उनकी पत्नी की बजाय ग़ैरकानूनी आप्रवासी हो जाएँ और आप पर कानून का शिकंजा सख़्ती से कसे. आपके ख़िलाफ़ जो कुछ मैंने कहा है उसके सारे प्रूफ़ कोर्ट में पेश कर दिए जाएँगे."

तन्वी और मनु का दंभ बदन से बह रहा था.

साकेत ने तो अपनी ज़िंदगी का पासवर्ड तन्वी को दे दिया था पर तन्वी के जीवन का पासवर्ड कहीं गुम हो गया था. एक भी ई-मेल नहीं खोल पाई... ❑

सम्बोधन

15वां आचार्य निरंजननाथ सम्मान
उपन्यास विधा पर प्रविष्टियां आमंत्रित
पुरस्कार : रु. 51000/-

आचार्य निरंजननाथ स्मृति सेवा संस्थान के सहयोग से सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष आचार्य निरंजननाथ की स्मृति में साहित्यिक पत्रिका 'सम्बोधन' द्वारा प्रति वर्ष दिया जाने वाला सम्मान इस बार उपन्यास विधा पर दिया जाएगा।

पुरस्कृत रचनाकार को इक्यावन हज़ार रुपए नकद, शाल, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया जाएगा।

इस 15वें अखिल भारतीय पुरस्कार हेतु गत पाँच वर्षों (2008-2012) में प्रकाशित उपन्यास की तीन प्रतियाँ लेखक, प्रकाशक या कोई भी शुभचिंतक भिजवा सकता है।

❖ प्रतिष्टियाँ 30 सितंबर 2013 के पूर्व संयोजक के पते पर अवश्य पहुँचा दें।

❖ पुरस्कार का निर्णय 2013 में ही कर दिया जाएगा।

निर्णायक मण्डल एवं सम्मान समिति के अध्यक्ष का निर्णय अंतिम एवं मान्य होगा।

सम्पर्क : **कमर मेवाड़ी**
संयोजक : आचार्य निरंजननाथ सम्मान-2013,
सम्बोधन, कांकरोली-313324
जिला राजसमंद (राजस्थान)
मो. : 09829161342